स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय

खण्डकाव्यक लक्षण

प्रो० सत्यनारायण मेहता

काव्यक अर्थ व्यापक अछि। सामान्य रूपसँ कविक कर्म काव्य भेल। कवि सर्वज्ञ होइत छथि। काव्य स्रष्टा सृष्टि थिक तें ओ ब्रह्मा, प्रजापति थिकाह। विभिन्न लक्षणकार लोकनि काव्यक विभिन्न परिभाषा प्रस्तुत कएने छथि। केओ आचार्य रसात्मक वाक्यकें काव्यक आत्मा निरूपित करैत छथि तें केओ ध्वनि के ओकर सर्वस्व मानैत छथि। किनकहु विचारसँ वक्रोक्ति काव्यक प्राण थिक तें केओ औचित्यकें काव्यक जीवन मानैत छथि। केओ अलंकार द्वारा अनुप्राणित मानैत छथि।

प्राचीन आचार्य लोकनिक ई लक्षण स्वयंमे बहुत किछु सत्य रहलो पर सर्व समादृत नहि रहल तथा वैज्ञानिक ढंगसँ साहित्यकार लोकनि एक मत-मत व्याख्या देलन्हि। एहि व्याख्या सभमे सेहो एकरूपता नहि अछि। रमणीयता, रीति, ध्वनि, अलंकार आदि सब तत्व काव्यक हेतु आवश्यक तत्व होइतहुँ कोनो एक तत्व काव्यक जीवनक पर्याय नहि भए सकैत अछि। सभ लक्षणक अनुसार मानव हृदयकें स्पर्श कय आनन्दक उद्रेक करबाक शक्ति काव्यक मूलमे अछि। अतएव सभक मूलमे एतबा अवश्य अछि जे हृदयक स्वाभाविक संवेदनाक कलात्मक व्यापार ओ अभिव्यक्ति काव्य थिक।

भारतक प्राचीन परम्पराक संस्कृत आचार्य लोकनि काव्यक दू भेद कयलन्हि अछि - दृश्य काव्य एवं श्रव्य काव्य। जाहि काव्यक आनन्द नेत्र द्वारा प्राप्त कयल जाइत अछि से दृश्य काव्य कहबैत अछि। श्रव्यकाव्य ओ काव्य थिक जकर आनन्द पढ़िकें अथवा सुनिकें लेल जाइत अछि। ओना तें श्रव्यकाव्यक तीन भेद कहल गेल अछि - गद्य, पद्य एवं चम्पू। गद्य एवं पद्य मिश्रित रचनाकें चम्पू काव्य कहल जाइत अछि। एहिमे गद्य एवं पद्य इएह दूनू प्रधान अछि।

पद्यमे बन्धक आधार पर प्रबंध एवं मुक्तक नामक दू [illegible] विभाग कयल गेल अछि। प्रबन्ध काव्यमे पूर्वापरक तारतम्य रहैत अछि। कथानक अनुसार छन्द दोसरसँ श्रृंखलाबद्ध रहैत अछि। ओहि क्रममे परिवर्तन अपेक्षित नहि। मुक्तक साधारणतः स्फुट रचनाकें कहल जाइत अछि। एहिमे कथानक एवं घटनाक कोनो क्रम निर्धारित नहि रहैत अछि अतएव पारस्परिक सम्बन्धक आवश्यकता [illegible] प्रतीत होइत अछि। एकरा अन्तर्गत केवल एक भाव निहित रहैत अछि जकर अभिव्यक्ति पर्याप्त मानल जाइत अछि। प्रबंध काव्यमे कथानकक गति पात्रक जीवनसँ सम्बन्ध रखैत आगू बढ़ैत अछि। प्रबंधकाव्यमे घटनाक एकक्रम रहैत अछि जकरा संग काल एवं परिणाम संगति होएबाक चाही। प्रबंध काव्यक सेहो दू भेद कयल गेल अछि - महाकाव्य एवं खंडकाव्य। निष्कर्षतः महाकाव्य श्रव्य काव्यक पद्य विभाजनक प्रबंध श्रेणीक अन्तर्गत एक सशक्त काव्य रूप थिक।

Scanned with CamScanner

संस्कृत काव्यशास्त्र मे आचार्य भामहक अपन "काव्यालंकार" नामक ग्रंथमे महाकाव्यक परिभाषा प्रस्तुत कयलनि अछि। हिनका अनुसारें महाकाव्य पैघ आकारक सर्गबद्ध रचना थिक। जकर कथाक आधार महान चरित्र होइत अछि। एहिमे अलंकारयुक्त शिष्ट भाषाक प्रयोग होइछ। विभिन्न वस्तुक विस्तृत वर्णन तथा नाटकीय पाँचो संधिक पर्व रहबाक चाही। अर्थ, धर्म, काम, मोक्षक विधान रहबाक चाही। नायकक अभ्युदय प्रदर्शित हो किन्तु ओकर वध नहि होयबाक चाही।

आचार्य दंडी महाकाव्यक संदर्भमे भामह द्वारा निर्दिष्ट सभ बातकें समेटि बहिरंग सम्बन्धी नियम पर सेहो बल देलनि अछि। यथा- वर्णन वैविध्य, अलंकृत चमत्कार आदि। दण्डीक परिभाषाक अनुकरण परवर्ती आचार्य रुद्रट तथा हेमचन्द्र कयलन्हि अछि। महत्‌उद्देश्य, महच्चरित, महती घटना एवं समग्र जीवनक रसात्मक चित्रण आदि चारि प्रमुख लक्षणक निर्देश कय आचार्य रुद्रट अपन दृष्टिकोणक व्यापकता एवं मौलिकताक परिचय देलनि अछि।

कविराज विश्वनाथ महाकाव्यक व्यापक एवं स्पष्ट परिभाषा प्रस्तुत कएलनि अछि। साहित्य दर्पण नामक ग्रन्थमे ई पूर्ववर्ती आचार्य द्वारा निर्देशित समस्त लक्षण सभक समाहार कयलनि।

कविराज विश्वनाथक अनुसार महाकाव्यक परिभाषा मे निम्नांकित तथ्य द्रष्टव्य अछि —

1. कथानकक ऐतिहासिकता
2. कथावस्तुक सर्गमे विभाजन
3. नाटकीय संधिक निर्वाह
4. उच्चकुलीन एवं धीरोदात्त गुणसें समन्वित नायक
5. शृंगार, वीर एवं शान्त रसमे एक रसक प्रमुखता एवं अन्य सभ रस सहायक
6. चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) फल प्राप्ति
7. सर्गक संख्या आठसें अधिक तथा सर्गान्तमे छन्द परिवर्तनक नियमक अनुपालन
8. आरम्भ मे नमस्कार, मंगलाचरण, आशीर्वचन आदि।
9. सज्जनक स्तुति, दुर्जनक निन्दा
10. संध्या, सूर्य, रजनी, प्रदोष, प्रात: मध्यान्ह, मृगया, पर्वत, ऋतु, सागर, संयोग, विप्रलम्भ, मुनि, पुर, यज्ञ, यात्रा, विवाह, मन्त्रणा, पुत्रोत्पत्ति आदिक सांगोपांग वर्णन

Scanned with CamScanner

(ii) महाकाव्यक नामकरण कवि, कथा अथवा नायक पर आधारित तथा सर्गक नाम कथाक आधार पर होयबाक चाही।

परवर्ती साहित्य मनीषी लोकनि द्वारा आचार्य विश्वनाथक परिभाषा विशेष रूपसँ मान्य भेल। वर्तमान धरि साहित्य दर्पणकार द्वारा निर्दिष्ट लक्षणक निर्वाह होइत रहल अछि। महाकाव्य विषयक प्रायः सभ समालोचनामे एकरहि रूपेमे स्वीकार कयल गेल अछि।

खण्डकाव्य सेहो प्रबन्धकाव्यक एक रूप थिक संस्कृतक आचार्य लोकनि प्रबन्धकाव्य शब्दक प्रयोग नहि कय सर्गबन्ध अथवा सर्गबन्धकाव्य शब्दक प्रयोग कयलनि अछि। एकर मात्र कारण अछि जे प्रबन्धक अन्तर्गत सर्गबन्ध काव्यक अतिरिक्त रूपक, कथा, आख्यायिका आदि सभ परिगणित होइत छल।

भामह आओर दण्डी सर्गबन्धक अर्थ महाकाव्यक रूपमे लेने छथि आओर खण्डकाव्यक चर्चा नहि कयने छथि।

रुद्रट सभ प्रकारक प्रबन्धकेँ महान आओर लघु द्वयमे विभाजित कए तकर अन्तर एहि प्रकारेँ स्पष्ट कयने छथि– महाकाव्यमे चतुवर्गक वर्णन आओर सभ रसक वर्णन होइत छैक आओर लघु काव्यमे चतुवर्गमे सँ कोनो एक अर्थ, धर्म, काम वा मोक्षक आओर रसमे सँ कोनो एक रसक वर्णन होइत छैक। एहि प्रकारेँ ई सर्वप्रथम महाकाव्य आओर लघुकाव्यक सम्बन्धमे मौलिक रूपसँ विचार कयने छथि।

आनन्दवर्धन प्रबन्धकाव्यक लेल सर्गबन्ध काव्य शब्दक प्रयोग कयने छथि, काव्यक भेदक वर्णन नहि।

हेमचन्द्र प्रबन्धकाव्यक अन्तर्गत कथा, आख्यायिका आओर चम्पूक संग खण्डकाव्यक चर्चा एहि प्रकारेँ देने छथि–

भाषा विभाषा नियमात्काव्यं सर्गसमुत्थितम ।
एकार्थ प्रवणै: सन्धिसामग्र्य वर्जितम ॥
खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैक: देशानुसारि च ॥

एहि परिभाषाक आधार पर कोनो भाषा अथवा उपभाषामे सर्गबद्ध एवं एक निरूपक पद्यग्रन्थ, जाहिमे सभ सन्धि नहि हो 'काव्य' कहाओत आओर काव्यक एक अंशक अनुसरण करयवाला 'खण्डकाव्य' कहाओत।

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र अपन 'वाङ्मय विमर्श' मे खण्डकाव्यक परिभाषा एहि प्रकारेँ देने छथि–

"महाकाव्यक शैली पर जाहि काव्यक रचना होइत अछि, ओहिमे जीवनक सम्पूर्ण चित्रण नहि रहि ओकर एकटा अंशक चित्रण रहैत अछि, किन्तु ओ स्वयंमे पूर्ण रहैत अछि ओकरे 'खण्डकाव्य' कहल जाइत अछि"।

डॉ० शम्भुनाथ सिंहक शब्दमे —

सामान्यतः आठ अथवा आठसँ अधिक सर्गवला प्रबन्धकाव्यकेँ आओर आठसँ कम सर्गवला काव्यकेँ खण्डकाव्य मानल जाइत अछि, किन्तु ई वैज्ञानिक वर्गीकरण नहि थिक। महाकाव्य ओहन प्रबंधकाव्यकेँ मानल जाइत अछि जाहिमे महान उद्देश्य, महान चरित्र, सम्पूर्ण जीवनक चित्रण एवं उदात्त शैली आदि महाकाव्यक सभ गुणसँ समन्वित हो। जाहि प्रबन्धकाव्यमे महाकाव्यक समस्त लक्षण विद्यमान नहि अछि, ओकर आकार छोट हो वा पैघ, आठ सर्ग होअए आठसँ कम ओ महाकाव्य नहि जाएत। एकर विपरित जाहिमे जीवनक अंश चित्रित होअय, कथानक लघु होअय, उद्देश्यक दृष्टिकोणसँ ओ पैघ नहि कहल जाइत होअय तँ ओ 'खण्डकाव्य' कहल जाएत"

उपर्युक्त वर्णित विद्वानक मतानुसार खण्डकाव्यक लक्षण एहि प्रकारेँ अछि —

(1) कथानक पौराणिक, ऐतिहासिक अथवा काल्पनिक कोनो प्रकारक रहि सकैछ।

(2) नायक नायिकाक जीवनक एकटा खण्ड विशेषक चित्रण खण्डकाव्य मे होइत।

(3) खण्डकाव्यकेँ सर्गबद्ध रहब आवश्यक नहि मानल गेल अछि। ओ सर्गबद्ध रहितो सकैत अछि तथा नहितो रहि सकैत अछि।

(4) खण्डकाव्यमे कोनो एक गोट रस प्रधान रहैत अछि। अन्यान्य रसक सेहो समावेश रहि सकैत अछि।

(5) खण्डकाव्यकेँ एकटा महान उद्देश्यक संग परिचालित होएबाक चाही जाहिसँ पाठक लोकनिक मनोरंजनक संग हुनक मानसिक परिष्कार भए सकय।

(6) खण्डकाव्य एकौ छन्दमे लिखल जा सकैत अछि।

संक्षेपमे कहल जा सकैत अछि जे महाकाव्यो जकाँ कथानक, चरित्र-चित्रण, वस्तु वर्णन, भाषा शैली, छन्द आदि रहैछ किन्तु अल्परूपमे।

खण्डकाव्यक रचना कविक सम्पूर्ण जीवन खंडक अनुभूतिक प्रभावसँ बनैत अछि। जीवनक मात्र मार्मिक खंड कवि हृदयसँ बहराइत नहि छैक परंच ओकर समान्वित प्रभाव हुनकर हृदय पर पड़ैत छैक। ओहि प्रेरणाक बल पर जाहि स्वरूपक निर्माण होइत छैक ओकरे खण्डकाव्य कहल जाइत छैक।